दिशा दर्शिका

(कार्यकर्ताओं के निजी उपयोग हेतु)

YOUTH FOR NATION

www.youthfornation.org

सक्षम युवाओं का बढ़ता हुआ समुच्चय यूथ फॉर नेशन (YFN) के निम्नलिखित उद्देश्य हैं जिन्हें Volunteers को ध्यान में रखना आवश्यक है :-

* रचनाधर्मी युवाओं का संगठन करना
* युवाओं को संस्कारित बनाना
* युवाओं के व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाना
* युवाओं में नेतृत्व क्षमता का विकास करना
* युवाओं को रोजगार सम्बन्धी दिशा देना
* सक्षम युवाओं को विविध सेवा कार्यों हेतु प्रेरित करना
* पदासीन स्वच्छ छवि वाले, ईमानदार युवाओं को प्रोत्साहन एवं समर्थन प्रदान करना
* सामाजिक विषमताओं व कुरीतियों को दूर करने का प्रयास करना
* लोक जागरण में सहयोग करना
* पर्यावरण संरक्षण में सहयोग करना
* सर्वत्र न्याय की स्थापना के लिए सहयोग एवं संघर्ष करना
* आपस में प्रेम, सद्भाव और सौहार्द का निर्माण करना
* राष्ट्रभक्ति एवं सामाजिक समरसता के वातावरण का निर्माण करना

इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आवश्यक कोई भी कार्य हम कर सकते हैं। सावधानी यह है कि रचनात्मक एवं सकारात्मक कार्य ही करने हैं। किसी भी प्रकार के धरना, प्रदर्शन, आन्दोलन, तोड़-फोड़ जैसी गतिविधियों में YFN की भागीदारी नहीं होनी चाहिए। देशभक्ति हमारी पहली आवश्यक शर्त है।

युवा

सरकारें कहती हैं 17 से 35 वर्ष की आयु के लोग युवा होते हैं। मान्यतायें हैं- बाल सफेद होने तक युवा, मुँह में दांत रहने तक युवा, कमर सीधी रहने तक युवा, कभी न थकने वाला-युवा, गलत बात को स्वीकार न करने वाला-युवा, आगे जाने का साहस रखने वाला-युवा, सेवा में हर समय तत्पर रहने वाला-युवा, सदैव उत्साह से काम करने वाला-युवा, पुरुषार्थ से काम करने वाला-युवा, संघर्ष की क्षमता रखने वाला-युवा, चुनौती स्वीकार करने वाला-युवा, हर समय सीखने की इच्छा रखने वाला-युवा, सिखाने की क्षमता रखने वाला-युवा, अपनी बात मनवाने का दम रखने वाला-युवा, धाराओं की दिशा मोड़ सकने वाला-युवा, कभी हार न मानने वाला-युवा, कठिन श्रम कर सकने वाला-युवा, जो मन से शक्तिशाली वह-युवा, जो मोर्चे पर अड़ जाये वह-युवा, जो परिवर्तन करके ही माने वह-युवा, बलिष्ठ भुजाओं वाला-युवा, जिनकी संगठित शक्ति से दुनियाँ हिल जाये वे- युवा, इत्यादि.....।

कुछ लोग कम आयु में ही स्वयं को युवा मान लेते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो बहुत अधिक आयु हो जाने पर भी अपने आप को युवा ही कहते हैं। इन बहुत सारी बातों में कर्म की अभिव्यक्ति, शरीर की स्थिति एवं मानसिक स्वीकारोक्ति के आधार पर ही युवा का निर्धारण हो पायेगा। जब कोई 15 से 40 वर्ष का स्त्री/पुरुष विलासी जीवन जीता है, युवाओं के उपरोक्त लक्षणों का उसमें अभाव होता है और जो आत्मकेन्द्रित, पशुवत स्वार्थी जीवन जीता है तब उसे युवा कह देना कहीं न कहीं बेईमानी होगी। स्वयं सोचें मैं युवा हूँ या नहीं ?

हमारे सामने का चित्र

बचपन में घर के वातावरण, पढ़ी गयीं अथवा सुनी गयीं कहानियाँ, माता-पिता, घर के अन्य बड़े लोग व शिक्षकों से मिले संस्कार तथा अन्य साथ रहने वालों की संगति के अनुसार युवा होने तक प्रत्येक का एक आदर्श निर्माण होता है। उस आदर्श से प्रेरणा लेकर जीवन चलता रहता है। क्या हमारे आदर्श में, प्रेरणा के श्रोत में सन्मार्ग पर ले जाने वाला व्यक्तित्व है- सभी युवा विचार करें ? श्रेष्ठ आदर्श के बिना युवा जीवन दिशा हीन है। युवाओं को अपना आदर्श, प्रेरणा श्रोत हर हाल में चाहिए। कल तक नहीं था तो आज चाहिए। यदि आज अपने आस-पास कहीं सामाजिक दोष दिखाई देता है तो युवाओं की आदर्श हीनता उसका एक बड़ा कारण है।

हमारे प्रेरणा स्रोत, आदर्श कौन हों ? सिनेमा कलाकार, राजनेता, खिलाड़ी, उच्च अधिकारी, संत, महापुरुष, समाज सेवी, माता, पिता, शिक्षक, मित्र में से कौन ? यदि हम युवा हैं तो हमें ही अपना आदर्श तय करना होगा। एक ऐसा आदर्श जिसकी प्रेरणा से हम उच्च स्थान प्राप्त कर सकें, जिसके व्यक्तित्व के अंश हमारे जीवन को सार्थक बनाने में सहायता करें। श्रवण कुमार, ध्रुव, प्रह्लाद, राम, हनुमान, कृष्ण, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द, सुभाष चन्द्र बोस, भगत सिंह, गाँधी, डा0 अम्बेडकर, डा0 कलाम, किरण बेदी आदि युवाओं के आदर्श के रूप में स्थापित हैं।

सभी युवा अपना कम से कम एक आदर्श तय करें। उसका कल्पना चित्र हर समय अपने सामने रखें। उसका छायाचित्र भी अपने घर में, कार्यस्थल पर लगा सकते हैं। श्रेष्ठ आदर्श से ही हमारा व्यक्तित्व श्रेष्ठ बन पायेगा।

हमें जाना कहाँ है

सब दौड़ रहे हैं। धन के लिए दौड़, पद के लिए दौड़। धार्मिक उन्माद में दौड़, संगठनों की प्रतिस्पर्धा की दौड़। शारीरिक सन्तुष्टि की दौड़, स्वजन तुष्टि की दौड़। कुछ लक्ष्य भी है ? एक मकान, दो मकान...। एक गाड़ी, दो गाड़ी...। एक बार सांसद, दो बार सांसद...। एक सम्मेलन, दो सम्मेलन...। एक जलसा, दो जलसे...। एक देश में खाता, दो देशों में खाते...। इंजीनियर बनने की दौड़। कम काम करके ज्यादा पाने की दौड़। बिना किये पाने की दौड़। इस दौड़ में नियम, व्यवस्थायें, एक दूसरे का सम्मान, सेवा भाव, वास्तविक सुख, सम्बन्धों की गरिमा, देशभक्ति सब किनारे हो रही है। जीवन का लक्ष्य कितनों को पता है ? बिना लक्ष्य के यात्रा कैसी ? वैसे तो लक्ष्य का निर्धारण कठिन है परन्तु कुछ आधार बातों को ध्यान में रखना ठीक है। अपनी आवश्यकताओं को कम करके रखना। उनकी पूर्ति के लिए पर्याप्त श्रम करना। अक्षम एवं बेसहारा लोगों के लिए थोड़ा श्रम और करना। उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक बनना। यदि इतना हुआ तो जीवन सरलता से चलेगा। दौड़ का दबाव नहीं रहेगा।

आज का युवा यदि दिशाहीन होकर दौड़ रहा है तो इसमें पिछली पीढ़ी की कुछ कमी हो सकती है। लेकिन जिन युवाओं को सही मार्ग मिल गया है, लक्ष्य प्राप्त हो गया है उनका दायित्व बढ़ जाता है। यदि वे अपना दायित्व नहीं निभाते तो यह बेईमानी है। व्यवस्थाओं को कोसने तथा परिस्थितियों का दास बनने का काम युवाओं का नहीं है। सक्षम युवाओं को चाहिए कि वे अन्धी दौड़ वालों को रोक कर उन्हें सही मार्ग बतायें। व्यवस्थाओं को अपने हाथ में लें और उन्हें ठीक करें।

दिनचर्या

हर दिन हमारे जीवन में महत्वपूर्ण है। एक दिन में 24 घंटे ही निर्धारित हैं। प्रत्येक घंटे एवं घंटे की मिनट में हमारी स्थिति ही दिनचर्या है। कुछ लोग बहुत व्यवस्थित तरीके से 24 घंटों में अपनी स्थिति का निर्धारण करते हैं। इसमें नित्यकर्म, श्रम, आहार, विश्राम, स्वाध्याय, मनोरंजन, यात्रा, सेवा, चिन्तन, अन्य कर्म सब शामिल है। ऐसे लोग सफल लोग हैं। उनका सानिध्य प्राप्त करने के अवसर खोजने चाहिए।

जिस परिवार के युवाओं की दिनचर्या व्यवस्थित है वे सफल परिवार होते हैं। जिस देश के युवाओं की दिनचर्या सन्तुलित एवं व्यवस्थित हो जाय उसे वैभवशाली बनने से कोई रोक नहीं सकता। व्यवस्थित दिनचर्या सफलता का एक सूत्र है। यह व्यक्तिगत जीवन तथा सार्वजनिक जीवन दोनों के लिए महत्वपूर्ण आवश्यकता है। मेरी दिनचर्या ठीक हो, मुझसे सम्बन्धित सभी युवाओं की दिनचर्या ठीक हो- ऐसी प्रतिबद्धता चाहिए। दिनचर्या ठीक करने एवं कराने के लिए प्रबल आग्रह चाहिए। दिनचर्या ठीक बनाये रखने के लिए अपने प्रति कठोरता चाहिए। जब सफलता का एक सूत्र व्यवस्थित दिनचर्या है और दिनचर्या हमारे हाथ में हो तब विफलता के लिए दूसरों को दोष क्यों देना ? छोटी-छोटी बातें ठीक करने से बड़ी-बड़ी चीजें ठीक रहती हैं। खाली पेट नित्य 5 मिनट व्यायाम करने से आजीवन बहुत से रोग शरीर को नहीं लगते। कार्य स्थल पर समय से जाने एवं समय से आने पर सम्मान बना रहता है। ऐसी बहुत सी बातें हैं। स्वयं विचार करके उनका पालन करने की आवश्यकता है।

बड़ा विषय छोटे काम

क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर- जीव संरचना के अवयव हैं, ये ही पर्यावरण के ढांचे के अंग हैं। जीव के तत्वों की सुरक्षा तो करनी ही पड़ेगी। यही पर्यावरण संरक्षण है। यह बहुत बड़ा विषय है। तभी तो दुनियाँ में सब जगह इस पर काम हो रहा है। यह अनिवार्य है इसलिए हो रहा है। यह अनिवार्यता हम सब पर लागू होती है। पर्यावरण को हानि पहुँचाने वाले अपराधी हैं, पापी हैं। पर्यावरण के लिए कुछ न करने वाले नाकारा है, घोर स्वार्थी हैं। जो पर्यावरण (जीव) के संरक्षण के लिए सक्रिय हैं वे लम्बे जीवन और सम्मान के अधिकारी हैं, श्रेष्ठ हैं।

पर्यावरण संरक्षण में जनसंख्या सन्तुलन, प्राकृतिक संसाधनों का दोहन, उद्योगों की स्थिति, वाहनों का उपयोग, नदियों का उपयोग, वर्षा जल प्रबन्धन, कूड़ा-कचरा प्रबन्धन, झील-तालाबों की उपयोगिता, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, e-waste, solid waste, वन्यजीव संरक्षण, वृक्षारोपण, कृषि में रसायन का प्रयोग आदि सम्मिलित हैं। पर्यावरण संरक्षण में राष्ट्रीय पर्यावरण नीति एवं उसका पालन भी महत्वपूर्ण है। पर्यावरण पर गोष्ठियाँ, सम्मेलन, रैली, महासम्मेलन बहुत हो रहे हैं। ये सब जागरूकता और योजना बनाने के लिए तो ठीक हैं परन्तु अपने नाम के प्रचार अथवा किसी लोभ के कारण ऐसा करना ठीक नहीं है। पर्यावरण के लिए हर व्यक्ति को सीधे-सीधे काम करना चाहिए। छोटे-छोटे काम ही बड़ा परिवर्तन कर देते हैं। पर्यावरण संरक्षण योजना का काम है। यह प्रत्येक की व्यक्तिगत योजना का हिस्सा होना चाहिए। गलती यह हो रही है कि हम इसे मात्र सरकारी योजना का काम मानते हैं। न्यूनतम जल का उपयोग, सादगी से जीवन जीने का अभ्यास, यन्त्र-संयन्त्रों का नियंत्रित उपयोग करके हम पर्यावरण संरक्षण में सहायता कर सकते हैं। पर्यावरण के नेक काम में सबको एक होना पड़ेगा।

जीवन का आधार

कल्पना करिये-स्याही के बिना पैन, बिजली के बिना बल्ब, रक्त के बिना शरीर और गाँवों के बिना भारत। गजब हो रहा है- भारत के गाँव शहर बनते जा रहे हैं। सक्षम लोग शहरों में बसते जा रहे हैं। शहरों में रहने वाले, कभी खेती न करने वाले लोग गाँव के खेतों को खरीदते जा रहे हैं। किसान उन्हें बेचते जा रहे हैं। और भी गजब है- खेत की मिट्टी विषैली है, अन्न भी विषैला है। खेत से गाय का गोबर गायब है। गाँव के लोग सब्जी, दाल, अन्न शहर से खरीद रहे हैं, यहाँ तक कि शहर से लाकर थैली का नकली दूध पी रहे हैं। फिर उस पॉलिथीन की थैली को खेत में फेंक रहे हैं। नदियाँ, तालाब सूख गये। भू-जल स्तर नीचा होता जा रहा है। पशुपालन एवं कृषि कार्य में ग्रामीणों की रुचि घट रही है। गाँव में झगड़े भी हैं। कोर्ट-कचहरी में दिनभर रहने वाले अधिकांश दुर्भाग्यशाली लोग गाँव के ही होते हैं। सबको रोजगार देने की क्षमता रखने वाला गाँव दिनभर युवाओं से खाली रहता है। सामूहिक प्रार्थना और यज्ञ का स्थान टेलिविजन और रंगीन मोबाइल ने ले लिया है। गाँव की प्राथमिक पाठशाला की स्थिति खराब है। एक मात्र भरोसा सरकार का है- आखिर क्यों ?

यह सारा दृश्य भयावह जरूर है लेकिन निराशा, हताशा समाधान नहीं है। गाँव की योजना गाँव में बैठकर ही बनेगी। गाँव के ही लोग बनायेंगे। गाँव से सम्बन्धित लोग सहायता करेंगे। सरकारी तन्त्र कुछ व्यवस्थायें करेगा। सब कुछ गाँव में होगा- मीठा जल, शुद्ध अन्न, पर्याप्त सब्जी व दालें, सबको रोजगार, सबको चिकित्सा, बालकों को अच्छी शिक्षा व संस्कार, यहाँ तक कि आपसी प्रेम और आनन्द भी। ऐसा हो भी रहा है लेकिन उनकी संख्या अभी कम है। उन गाँवों के युवाओं ने रुचि ली है तब ऐसा हुआ है। हम एक बार वहाँ जायें, देखकर आयें। अपने गाँव में रुचि लें। गाँव को गाँव रहने दें। गाँव रहेंगे तो भारत बचेगा। मैं बचाऊँगा- ऐसा संकल्प लें।

सहायक या सम्पूर्ण

सजी हुयी दुकानों में रखे खाद्य पदार्थ, स्टेशनरी, वस्त्र, दवाईयाँ, फर्नीचर, खिलौने, दैनिक उपयोग के सामान ये सब गाँव में उत्पादित वस्तुओं का प्रसंस्करित रूप हैं। प्रत्येक गाँववासी चाहता है कि मेरे गाँव की सड़क शहर से जुड़ जाय और शहर के लिए यातायात का सीधा साधन हो जाय। इस प्रकार शहर और गाँव का बड़ा अटूट नाता है। शहर अथवा गाँव अपने आप में सम्पूर्ण दिखते हुए एक दूसरे के सहायक हैं और एक दूसरे की सहायता के बिना वास्तव में अधूरे हैं।

शहरी जीवन आकर्षक है। कुछ लोगों का शहर में रहना और बसना अपरिहार्य हो सकता है। जो शहर में हैं उन्हें विचार करना चाहिए कि उनका शहर में रहना अथवा आना कितना जरूरी है ? शहर को स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त बनाने में उनका क्या योगदान है ? शहर की व्यवस्थाओं को ठीक रखने में उनकी क्या भूमिका है ? वे सरकार/समाज प्रदत्त सुविधाओं का कितना सदुप्योग कर रहे हैं ? शहर में आकर उनके द्वारा क्या-क्या अपव्यय हो रहा है ? इत्यादि।

हमारा जिससे प्रेम है हम उसके निकट अवश्य जाना चाहेंगे। ग्रामवासी शहरों के प्रति अपना प्रेम प्रकट करते रहते हैं। यदि हम नगरवासी हैं तो हमारा गाँव के प्रति प्रेम प्रकट हो रहा है क्या ? किसी भी कारण से हम यदि गाँव अथवा ग्रामीण जनों के प्रति उपेक्षा का भाव रखते हैं तो यह ठीक नहीं है। शहरी लोगों की असन्तुष्टि एवं अशान्ति का कारण गाँवों से प्रेम न होना भी है। यदि हमारा अपना गाँव नहीं है तो किसी भी गाँव को अपना मान कर वहाँ जाना, वहाँ की कठिनाईयों को समझना, अपनी सामर्थ के अनुसार उनके निवारण में सहयोगी बनना अत्यन्त जरूरी है। यदि भारत के गाँव, गाँव नहीं रहेंगे तो शहर भी शहर नहीं रहेंगे। एक दूसरे की सहायता में ही सम्पूर्णता है।

नेतृत्व

नेता होना अच्छी बात है लेकिन नेताजी शब्द गाली सा हो गया है। चुनाव जीतने या लड़ने वाला हर व्यक्ति नेता नहीं है। वह जन-प्रतिनिधि हो सकता है। कुछ जन-प्रतिनिधि नेता होते हैं। शेष तो पिललग्गू हैं- पद के, पैसे के या किसी और के। जिसकी बात मान ली जाय वह नेता है। जिस पर लोग भरोसा करें वह नेता है। जो सही मार्ग बताये वह नेता है और जो सही जगह पहुँचा दे वह नेता है। जो स्वयं प्रेरणा श्रोत है वह नेता है और जो दूसरों को प्रेरणा स्रोत बना दे वह नेता है। जो अगली पीढ़ी का भविष्य संवारे वह नेता है लेकिन जिसके निर्णय से पीढ़ियां कष्ट पायें वह किस बात का नेता है ? जो सिर्फ देता ही देता है वह नेता है।

किसी बनी हुयी व्यवस्था में किसी काम को धन लेकर पूरा करने वाला तो वेतनभोगी है, कर्मचारी है, वह चाहे प्रधान हो या प्रधानमंत्री। निजी स्वार्थ के बिना योजनायें बनाना, व्यवस्थाओं में सहयोग करना, दूसरों के जीवन को उन्नतिशील बनाने में सहायता करना, पक्षपात रहित निर्णय करना ही नेतृत्व है।

यूथ फॉर नेशन का प्रत्येक कार्यकर्ता नेता बने यह जरूरी है। लेकिन यदि वह चुनाव लड़ेगा तो यूथ फॉर नेशन का सहयोगी बनकर काम कर सकता है। चुनाव लड़ने के बाद तो गलत निर्णयों का खतरा है। YFN के कार्यकर्ता को हर क्षेत्र में नेतृत्व करना है। हर बात पर नज़र रखनी है। प्रत्येक व्यवस्था में सधी हुयी विधि सम्मत दखल रखनी है। एक जागरूक नागरिक और देशभक्त युवक के रूप में हर समय रहना है। सभी को मित्र बनाने का प्रयास करना है। भारत दुनियाँ का नेतृत्व करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है, हमें भी भारत में रहकर भारत का नेतृत्व करने की दिशा में आगे बढ़ना होगा। सेवा इसका आधार होगा।

सेवा

'सेवा करना' यह शब्द युग्म युवाओं के लिए है। 'सेवा कराना' यह युवाओं के लिए बिल्कुल नहीं है। सेवा के बारे में बताया है :-

- यदि तुम्हें भगवान की सेवा करनी है तो रोगी, दरिद्र, पीड़ित के रूप में मनुष्य की सेवा करो।
- सेवा के पुनीत माध्यम से ही हम समाज को अपना बना सकते हैं।
- जो बिना किसी स्वार्थ की आकांक्षा के की जाय वह सेवा है।
- सभी व्यक्ति समान एवं पवित्र भाव से सेवा के योग्य हैं।
- एक बार सच्ची सेवा भावना जीवन में प्रवेश कर जाय तो यह अनुभव होने लगता है कि अपनी व्यक्तिगत और पारिवारिक सम्पत्ति कितनी अधिक क्यों न हो, वास्तव में अपनी नहीं है।
- सम्पूर्ण सम्पत्ति में से केवल उतनी ही अपने उपभोग में लानी चाहिए जितने से हमारी सेवा की क्षमता बनी रहे।
- सेवा का शुद्ध भाव उदय हो जाने पर अहं अथवा आत्मप्रशंसा के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता।
- सेवा का सर्वोत्तम प्रकार - अभावों की पूर्ति एवं राष्ट्र चेतना व एकत्व का निर्माण है।
- बीमार व्यक्ति की सच्चे मन से सेवा की जाय तो शीघ्र ठीक होता है।
- सेवा उपकार की भावना से नहीं की जानी चाहिए।
- भारतीय जीवन दर्शन में सेवा का स्वभाव निःस्वार्थ भाव है।
- स्वार्थ का प्रवेश होते ही वह सेवा न रहकर व्यापार हो जाती है।
- सेवा अत्यन्त विकेन्द्रित रूप से चली आ रही श्रेष्ठ परम्परा है।
- सेवा ऐसी जिसमें सेवक एवं सेवित एक रूप हो जायें।
- सेवा तन से, मन से, धन से, तन-मन-धन-जीवन से।

हम सभी को सेवा का अर्थ समझ में आना चाहिए।

दायित्व रचना

मुख्य संयोजक (CC), क्षेत्र संयोजक (RC)

प्रदेश- अध्यक्ष (SP) , उपाध्यक्ष-1 (SVP), उपाध्यक्ष-2, महासचिव (GS), संयोजक (SC), सह संयोजक (SDC), कोषाध्यक्ष (ST), मीडिया प्रभारी (PMP), प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य-5 से 11 (PKS), संरक्षक मण्डल- 11 सदस्य (PSS)

मण्डल- मण्डल प्रभारी (MP) [पदेन प्रदेश सचिव]

जिला/महानगर- अध्यक्ष (DP) , उपाध्यक्ष-1 (DVP), उपाध्यक्ष-2, सचिव (DS), सह सचिव-1 (DDS), सह सचिव-2, संयोजक (DC), सह संयोजक (DDC), कोषाध्यक्ष (DT), मीडिया प्रमुख (ZMP), जिला कार्यकारिणी सदस्य-5 (ZKS), संरक्षक मण्डल- 5 सदस्य (ZSS)

तहसील- संयोजक (TC), सह संयोजक (TDC) + Volunteers की टोली

विकासखण्ड- संयोजक (BC), सह संयोजक (BDC)+Volunteers की टोली

नगरपालिका- संयोजक (NC), सह संयोजक (NDC)+Volunteers की टोली

ग्राम- संयोजक (VC), सह संयोजक (VDC) + Volunteers की टोली

प्रकल्प (Project) - प्रकल्प प्रमुख (PH)

- प्रदेशस्तरीय पदाधिकारी व मण्डलप्रभारी का नामांकन केन्द्र द्वारा होगा।
- जिला एवं उससे नीचे के पदाधिकारियों की घोषणायें मण्डल प्रभारी द्वारा प्रदेश / केन्द्र से विचार विमर्श के बाद की जायेंगी।
- प्रत्येक नामांकन/घोषणा अगली घोषणा तक मान्य रहेगी।
- YFN के सभी पदाधिकारी व सदस्य Volunteer के रूप में कार्य करेंगे।
- YFN के पदाधिकारी के पास किसी भी राजनैतिक दल की जिम्मेदारी नहीं होनी चाहिए।
- YFN के सभी पदाधिकारी युवा होंगे।

याचना के स्वर

वह शक्ति हमें दो दया निधे, कर्तव्य मार्ग पर डट जावें।
पर सेवा पर उपकार में हम, निज जीवन सफल बना जावें।।

हम दीन दुःखी निबलों विकलों, के सेवक बन सन्ताप हरें।
जो हैं अटके भूले भटके, उनको तारें खुद तर जावें।।

छल, दम्भ, द्वेष, पाखण्ड, झूठ, अन्याय से निशि-दिन दूर रहें।
जीवन हो शुद्ध सरल अपना, शुचि प्रेम सुधारस बरसावें।।

निज आन-मान मर्यादा का, प्रभु ध्यान रहे अभिमान रहे।
जिस मातृ-भूमि पर जन्म लिया, बलिदान उसी पर हो जावें।।

इतनी शक्ति हमें देना दाता, मन का विश्वास कमजोर हो ना।
हम चलें नेक रस्ते पै हमसे, भूल कर भी कोई भूल हो ना ।।

दूर अज्ञान के हों अंधेरे, तू हमें ज्ञान की रोशनी दे।
हर बुराई से बचते रहें हम, जितनी भी दे भली जिन्दगी दे।
बैर हो ना किसी का किसी से, भावना मन में बदले की हो ना ।।

हम न सोचें हमें क्या मिला है, हम ये सोचें किया क्या है अर्पण।
फूल खुशियों के बाँटें सभी को, सबका जीवन ही बन जाये मधुवन।
अपनी करुणा का जल तू बहा के, करदे पावन हर एक मन का कोंना।।

चिन्तन गान

नवीन पर्व के लिए, नवीन प्राण चाहिए।
नवीन प्राण चाहिए।।
स्वतन्त्र देश हो गया, प्रभुत्वमय दिशामही।
निशा कराल टल चली, स्वतन्त्र माँ विभामयी।
मुक्त मातृभूमि को नवीन मान चाहिए।।
चढ़ रहा निकेत है कि, स्वर्ग छू गया सरल।
दिशा-दिशा पुकारती कि, साधना करो सफल।
मुक्त गीत हो रहा, नवीन राग चाहिए।।
युवक कमर कसो कि, कष्ट कंटकों की राह है।
प्राण दान का समय, उमंग है उछाह है।
पगों में आँधियां भरें, प्रयाण गान चाहिए।।

ये उथल-पुथल उत्ताल लहर, पथ से न डिगाने पायेगी।
पतवार चलाते जायेंगे, मंजिल आयेगी-आयेगी।।
लहरों की गिनती क्या करना, कायर करते हैं करने दो।
तूफानों से सहमे जो हैं, पल पल मरते हैं मरने दो।
चिर पावन नूतन बीज लिए, मनु की नौका तिर जायेगी।।
अनगिन संकट जो झेल बढ़ा, वह यान हमारा अनुपम है।
नायक पर है विश्वास अटल, दिल में बाँहों में दमखम है।
यह रैन अंधेरी बीतेगी, ऊषा जय-मुकुट चढ़ायेगी।।
इतिहास हमारा सम्बल है, विज्ञान हमारा है भुजबल।
गत वैभव का आदर्श आज, कर देगा भावी भी उज्ज्वल।
नूतन निर्मिति की तृप्ति अमर, फिर गीत विजय के गायेगी।।

आह्वान गीत

उठो जवानो आगे आओ, भारत माता रही पुकार।
सोई कहाँ जवानी तेरी, उठकर त्वरित भरो हुंकार।।
आज देश को पुनः जरूरत, वीर रूप धरकर आओ।
संकट विपदा हरो जनों की, प्रेरक बन आगे आओ।
मस्तानों की टोली बनकर, फिर से आगे बढ़ जाओ।
अमर जवानी करके अपनी, गौरव गाथा बन जाओ।
पुनः विवेकानन्द बनो तुम, मानवता है रही पुकार।।
पीड़ित मानवता का रक्षक, फिर से तुमको बनना है।
अनाचार आतंकवाद से, फिर से तुमको लड़ना है।
भाईचारा राष्ट्रभक्ति का, पोषक तुमको बनना है।
मानवता की रक्षा करने फिर से तुमको उठना है।
उठो साथियो शंकर बनकर, करने को विष का सत्कार।।

हम मस्तों में आन मिले कोई हिम्मत वाला रे,
अरे कोई हिम्मत वाला रे,
दल बादल सा निकल पड़ा यह दल मतवाला रे,
अरे कोई हिम्मत वाला रे।

बिजली सी तड़फन नस-नस में, आज नहीं हम अपने बस में
नये खून में लहरें ले रही जीवन ज्वाला रे।। अरे कोई.....

तूफानों से टक्कर लें हम, पर्वत के दो टूंक करें हम।
बहुत दिनों अन्याय का हमने बोझ संभाला रे।। अरे कोई.....

संदेश

इस समय तुम्हारा कर्तव्य यही है कि देश के एक भाग से दूसरे भाग में, एक गाँव से दूसरे गाँव को जाओ और लोगों को यह समझा दो कि अकर्मण्य बने रहने से कुछ नहीं होगा। उन्हें उनकी वास्तविक स्थिति से परिचित करा दो और कह दो भाईयो ! उठो, जागो, जागो ! और कितनी देर तक सोये रहोगे ?

स्वामी विवेकानन्द

भय पर विजय प्राप्त करने का उपाय है शक्ति...। हमारे भीतर अनन्त शक्ति निहित है। उस शक्ति का बोध करना पड़ेगा। पूजा का अर्थ है मन में शक्ति का बोध करना।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

भारत अपने चन्द शहरों में नहीं बल्कि सात लाख गाँवों में बसा हुआ है। शहरों को विदेशी आधिपत्य ने बनाया है...। अगर गाँवों का नाश होता है तो भारत का भी नाश हो जायेगा। गाँवों का शोषण एक संगठित हिंसा है।

महात्मा गाँधी

युवा मेधाओं को किस प्रकार प्रज्ज्वलित किया जा सकता है ? युवाओं को राष्ट्र निर्माण की चुनौती से कैसे जोड़ा जा सकता है ? नये सिरे से जुटाई गयी ताकत के साथ अपनायी गयी समग्र परिकल्पना ही युवा शक्ति को इस कार्य के लिए प्रेरित करेगी।

डा0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम

Register yourself as volunteer at www.youthfornation.org
Contact : 09719401131, 09258073486